

डॉ. गैरी येट्स, यिर्मयाह, व्याख्यान 27, यिर्मयाह 30-33, पुनर्स्थापना के चरण, भाग 1

© 2024 गैरी येट्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. गैरी येट्स हैं जो यिर्मयाह की पुस्तक पर अपने निर्देश दे रहे हैं। यह सत्र 27 है, यिर्मयाह 30-33 से पुनर्स्थापना के चरण।

यिर्मयाह की पुस्तक के हमारे अध्ययन के दौरान, हमने निश्चित रूप से भविष्यवक्ता के न्याय के संदेशों को देखने के लिए समय निकाला है, लेकिन हमें यहाँ पाठ्यक्रम के अंत में यिर्मयाह के पुनर्स्थापना के संदेश के सकारात्मक पहलुओं के बारे में अधिक बात करने का अवसर भी मिला है।

यिर्मयाह 30 से 33 में मुख्य अनुच्छेद, निश्चित रूप से, नई वाचा का वादा है और यह नई वाचा जिसे परमेश्वर बनाने जा रहा है, वह वास्तव में पुराने नियम में मुक्ति की कहानी को उन सभी की पूर्ति में बदल देती है जिन्हें परमेश्वर डिजाइन कर रहा है और मसीह में करने का इरादा रखते हैं। जैसा कि हम पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के वादा अनुभागों को देखते हैं, मूल रूप से चार प्रमुख वादे हैं जो वे जो समझते हैं उसके केंद्र में हैं: इज़राइल की भविष्य की बहाली, भगवान का राज्य, और यह कैसा दिखेगा। नंबर एक, वे भूमि पर वापसी और भगवान द्वारा अपने लोगों को निर्वासन से वापस लाने की बात करते हैं।

नंबर दो, वे यहूदा के शहरों, विशेषकर यरूशलेम और मंदिर के पुनर्निर्माण के बारे में बात करते हैं। वह पहलू निश्चित रूप से यिर्मयाह की पुस्तक में मौजूद है, हालाँकि मंदिर के पुनर्निर्माण पर जोर वास्तव में नहीं है। भविष्य के मसीहा का आगमन तीसरा महत्वपूर्ण तत्व है।

और फिर चौथा, यह वादा सिर्फ़ इस्राएल के लिए नहीं है। आखिरकार, पुनर्स्थापना, राज्य की आशीषों में राष्ट्र भी शामिल होंगे। और इसलिए, ये वे मुख्य वादे हैं जिन्हें हम पुनर्स्थापना की पुस्तक में देख रहे हैं।

मैं चाहता हूँ कि हम कुछ सत्रों में इस बारे में सोचें, जब हम इस संदेश को पवित्रशास्त्र के प्रकाश में लागू करते हैं, तो यह पुनर्स्थापना कब होती है? और हम पुनर्स्थापना और नई वाचा और आने वाले राज्य के इन वादों की पूर्ति को कैसे समझते हैं? हम उनकी पूर्ति को कैसे समझते हैं? और एक महत्वपूर्ण अवधारणा है जो इस सत्र और अगले सत्र में चलने वाली है। यह विचार है कि पुनर्स्थापना के वादे अभी भी हैं और अभी नहीं भी हैं। इस्राएल के इतिहास के संदर्भ में, यिर्मयाह के दृष्टिकोण से इस पुनर्स्थापना का एक पहलू है जो निकट और दूर दोनों है।

70 साल बाद एक ऐसी पुनर्स्थापना होगी जब परमेश्वर अपने लोगों को निर्वासन से वापस लाएगा। लेकिन वह पुनर्स्थापना वास्तव में एक और पुनर्स्थापना की ओर इशारा करती है, एक वापसी जो परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी पर लाएगी। और यह कुछ ऐसा है जिसके बारे में भविष्यवक्ताओं ने अंतिम दिनों में होने की बात कही है।

अब, भविष्यवक्ताओं ने हमेशा निकट और दूर की पुनर्स्थापनाओं के बीच अंतर नहीं देखा। लेकिन जैसे-जैसे हम उद्धार के इतिहास को सामने आते देखते हैं, जैसे-जैसे हमें नए नियम के प्रकाशन का अतिरिक्त परिप्रेक्ष्य दिया जाता है, हम समझते हैं कि अंतिम दिनों, पुनर्स्थापना, नई वाचा, भूमि पर वापसी और परमेश्वर के राज्य के बारे में ये भविष्यवाणियाँ चरणों में पूरी होती हैं। और मैं चाहता हूँ कि हम इस बारे में तीन अलग-अलग चरणों में पूरी होने वाली पुनर्स्थापना की प्रतिज्ञाओं के परिप्रेक्ष्य से सोचें।

सबसे पहले, चरण संख्या एक, और यह निश्चित रूप से यिर्मयाह के दृष्टिकोण का हिस्सा है, यह है कि एक पुनर्स्थापना होती है जो लोगों के निर्वासन से लौटने और उस भूमि पर लौटने के रूप में होती है जो इतिहास में 536 ईसा पूर्व में हुई थी। याद रखें, यिर्मयाह ने भविष्यवाणी की थी कि निर्वासन 70 वर्षों तक चलने वाला है। और अगर हम कल्पना करें कि 605 निर्वासन की शुरुआत है, 538 उसका अंत है, तो हमारे पास 67 वर्ष हैं।

अगर हम 586 से 538 तक की तारीख लें तो हमारे पास थोड़ी अलग तारीख होगी, लेकिन निर्वासन के समय के बारे में बात करने के लिए मूल रूप से 70 साल एक गोल संख्या के रूप में इस्तेमाल किए जाते हैं। निर्वासन में गई पीढ़ी मूल रूप से वापस आने वाली पीढ़ी नहीं होगी। एक पूरा जीवनकाल होगा जब इस्राएल के लोग भूमि पर रहेंगे।

लेकिन जब 538 ईसा पूर्व में बेबीलोन फारसियों और साइरस के कब्जे में आ गया, तो साइरस ने 536 में एक आदेश जारी किया, जिसने यहूदियों को वादा किए गए देश में लौटने की अनुमति दी। और यह भूमि पर वापसी के संबंध में यिर्मयाह और अन्य भविष्यवक्ताओं के वादों की पूर्ति का पहला चरण है। लेकिन भूमि पर वापसी वास्तव में पूर्ति का केवल पहला चरण था।

इसने उन सभी वादों को पूरी तरह से पूरा नहीं किया जो यशायाह, यिर्मयाह और अन्य पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने बहाली के बारे में किए थे। वास्तव में, यदि यह उन वादों की एकमात्र पूर्ति है, तो ऐसा लगता है कि यशायाह और यिर्मयाह बड़े अंतर से चूक गए हैं। और कभी-कभी, हम ऐसी चीज़ें देखते हैं जिनका विज्ञापन हमारे लिए किया जाता है।

शायद हमें एक्सपीडिया.कॉम पर एक होटल मिल जाए। और जब हम वहां पहुंचते हैं, तो हमें पता चलता है कि हो सकता है कि इसका विज्ञापन करने वाले लोगों ने इसे एक दिलचस्प कोण से या जो हम वास्तव में देख रहे हैं उससे कुछ अलग चित्रों के साथ शूट किया हो। और यदि इतिहास में निर्वासन से वापसी के बारे में भविष्यवक्ता बात कर रहे थे, तो उनकी भाषा अविश्वसनीय रूप से आदर्शवादी है। तो, ऐसा प्रतीत होता है कि एक पूर्ति हुई है जिसका विस्तार उससे भी आगे जाना है।

एक वापसी होनी चाहिए जो वापसी से आगे तक जाएगी। इतिहास में जो अनुभव किया गया था उससे परे एक पुनर्स्थापना होनी चाहिए। और मुझे लगता है कि हम प्रकाशितवाक्य के शेष भाग के माध्यम से और यहां तक कि यिर्मयाह से लेकर भूमि पर लौटने तक के पुराने नियम के इतिहास में भी समझ में आ गए हैं, कुछ अर्थों में निर्वासन केवल लोगों के भूमि पर वापस आने से समाप्त नहीं होता है।

और मैं हमें कुछ अंश देना चाहता हूँ जो मुझे लगता है कि हमें इसे देखने में मदद करेंगे। यिर्मयाह की पुस्तक में, यिर्मयाह अध्याय 29 में, भविष्यवक्ता स्वयं उन लोगों के लिए भगवान की योजनाओं के बारे में बात करने जा रहा है जो निर्वासन में रह रहे हैं। मैं जानता हूँ कि आपके लिए मेरे पास जो योजनाएं हैं, वे आपको समृद्ध करने, आपको आशा और भविष्य देने की योजनाएं हैं।

यिर्मयाह अध्याय 29, श्लोक 12 से 14 में उस भविष्य का वर्णन है। तुम मुझे पुकारोगे, और आकर मुझ से प्रार्थना करोगे, और मैं तुम्हारी सुनूंगा। तुम मुझे ढूँढ़ोगे, और जब तुम मुझे पूरे मन से ढूँढ़ोगे तो तुम मुझे पाओगे, और मैं तुम्हें पाऊंगा, प्रभु की यही वाणी है, और मैं तुम्हारे भाग्य को बहाल कर दूंगा, मुख्य अभिव्यक्ति जो 30 से 33 में उपयोग की गई है, और मैं तुम को सब राष्ट्रों से और उन सब स्थानों से इकट्ठा करूंगा जहां मैं ने तुम्हें निकाल दिया है, यहोवा की यही वाणी है, और मैं तुम्हें वापस ले आऊंगा।

यिर्मयाह का कहना है कि भगवान ने निर्वासन के माध्यम से इज़राइल के भविष्य की बहाली और काम करने के लिए खुद को प्रतिबद्ध किया है। लेकिन यह केवल उनके भविष्य के आशीर्वाद की स्वचालित गारंटी नहीं है। जब वे प्रभु की तलाश करेंगे तो उन्हें मिल जाएगा, या उन्हें इन चीजों का अनुभव होगा।

जब वे पूरे दिल से प्रभु की तलाश करेंगे, तो उन्हें पुनर्स्थापना का पूरा आशीर्वाद प्राप्त होगा। वास्तविकता, जैसा कि हम 538 से 536 में हुए निर्वासन से ऐतिहासिक वापसी को देखते हैं, यह है कि लोग भूमि पर लौट आए, या कम से कम उनमें से कई लौट आए, लेकिन उन्होंने वास्तव में अपनी आध्यात्मिक स्थिति और अपने दिल को बदले बिना अपना भूगोल बदल दिया। ईश्वर के लिए। और पूर्ण बहाली उनके संपूर्ण हृदय से परमेश्वर को खोजने पर निर्भर करेगी।

इसलिए, इन सबमें परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को पुनर्स्थापित करने के लिए किए गए उद्धारकारी प्रयासों और परमेश्वर द्वारा किए गए उद्धारकारी प्रयासों के प्रति उनके द्वारा की जाने वाली प्रतिक्रियाओं के बीच संतुलन है। हम इसे दानियेल की पुस्तक में भी देखते हैं, और हमने पहले इस अंश के बारे में बात की है। दानियेल, यिर्मयाह के वादों के आधार पर कि निर्वासन 70 वर्षों तक चलेगा, दानियेल अध्याय 9 में, परमेश्वर से अपने वादों को पूरा करने के लिए प्रार्थना कर रहा है।

वह अपने पाप को स्वीकार कर रहा है, वह लोगों के पाप को स्वीकार कर रहा है, और वह परमेश्वर के वादों के आधार पर प्रार्थना कर रहा है कि पुनर्स्थापना होगी। खैर, परमेश्वर उस प्रार्थना के जवाब में दानियेल को एक अतिरिक्त रहस्योद्घाटन देने जा रहा है जो हमारे लिए, कुछ हद तक, यिर्मयाह के संदेश को स्पष्ट करता है। और परमेश्वर दानियेल से कहने जा रहा है, हाँ, यिर्मयाह ने भविष्यवाणी की थी कि 70 वर्षों के भीतर, लोग भूमि पर वापस आ जाएंगे।

लेकिन दानियेल 9, 24 से 27 में, हमें अतिरिक्त रहस्योद्घाटन मिलता है कि इस्राएल की पूर्ण बहाली, पाप का पूर्ण अंत, वाचा संबंध की पूर्ण बहाली, मंदिर की पुनर्स्थापना, इस्राएल का भूमि पर सुरक्षित रूप से स्थापित होना, सात वर्षों के 70 सप्ताहों में नहीं होगा। चाहे हम इसे शाब्दिक 490-वर्ष की अवधि के रूप में लें या जिस तरह से तिथियों और समय अवधियों का उपयोग

सर्वनाशकारी साहित्य में किया जाता है, उसे केवल एक लंबे समय के संदर्भ के रूप में देखें, हमारे पास यहाँ वास्तविकता है कि पूर्ण बहाली केवल तब नहीं होने वाली है जब लोग कुसू के आदेश के परिणामस्वरूप भूमि पर वापस आते हैं। हमारे पास नहेमायाह की एक दिलचस्प प्रार्थना है, जो इस्राएल के लोगों के नागरिक नेताओं में से एक है, जब वे भूमि पर वापस आते हैं।

और मैं सिर्फ नहेम्याह 9, आयत 36 और 37 में यह प्रार्थना पढ़ना चाहता हूँ। नहेम्याह क्या कहता है, इसे सुनिए; लोग पहले ही देश में वापस आ चुके हैं; वे वापसी के आशीर्वाद का अनुभव करना शुरू कर रहे हैं जिसके बारे में यिर्मयाह ने भविष्यवाणी की थी। वास्तव में, नहेम्याह उस वापसी की बाद की लहरों में से एक का नेतृत्व कर रहा है।

और वह कहता है: देखो, आज हम दास हैं। जिस देश को तूने हमारे पूर्वजों को दिया था कि वे उसके फल और उत्तम वस्तुओं का आनन्द लें, उसी में हम दास हैं। और उसकी उत्तम उपज उन राजाओं को मिलती है, जिन्हें तूने हमारे पापों के कारण हमारे ऊपर नियुक्त किया है।

वे हमारे शरीर और हमारे पशुओं पर अपनी मर्जी से शासन करते हैं, और हम बहुत संकट में हैं। अब, लोग मूल रूप से सौ साल से इस भूमि पर हैं। पहली वापसी पिछली शताब्दी में हुई थी।

लेकिन नहेमायाह, जैसा कि वह इसे देख रहा है, कहता है कि हम अभी भी बंधन और गुलामी में हैं। मुक्ति और जुए के सभी वादे टूट चुके हैं, हम अभी भी विदेशी उत्पीड़न के अधीन हैं। और इसलिए, साइरस के आदेश के साथ शुरू हुई निर्वासन से वापसी उन वादों की पूरी पूर्ति नहीं है जो परमेश्वर ने यिर्मयाह से इस्राएल के लोगों की वापसी और बहाली के बारे में किए थे।

हम निर्वासन के बाद के भविष्यवक्ताओं के संदेश को देखना शुरू करते हैं और मुझे लगता है कि हम इसे स्पष्ट रूप से देखते हैं। भविष्यवक्ता जोएल, जो पुस्तक में हमें मिले कुछ सुरागों और संकेतकों से, निर्वासन के बाद के भविष्यवक्ता प्रतीत होते हैं, एक टिड्डे के आक्रमण के बारे में बात करते हैं जिसे परमेश्वर ने उन लोगों के खिलाफ लाया था जिन्होंने भूमि को बुरी तरह से तबाह कर दिया था। और वह टिड्डे की महामारी विशेष रूप से उनके पाप के दंड के रूप में लाई गई थी।

योएल ने उन्हें चेतावनी दी कि यदि वे परमेश्वर के किए गए कामों को नहीं सुनते या परमेश्वर द्वारा उनके विरुद्ध लाए गए न्याय पर ध्यान नहीं देते, तो प्रभु उनके विरुद्ध एक सेना लाएगा जो टिड्डियों के प्रकोप से भी अधिक विनाश लाएगी। और न्याय के भविष्यवक्ता के रूप में योएल वही बात कहने जा रहा है जो भविष्यवक्ताओं ने निर्वासन से पहले लोगों से कही थी: सावधान रहो, प्रभु का दिन आ रहा है। अब, सौभाग्य से, ऐसा लगता है कि लोगों ने, जैसा कि हम योएल अध्याय 2 में पढ़ते हैं, उन चेतावनियों का जवाब दिया और पश्चाताप किया।

लेकिन वास्तविकता यह है कि निर्वासन के बाद की अवधि में भी, न्याय की और भी चेतावनियाँ हैं क्योंकि लोग पूरी तरह से भगवान के पास वापस नहीं आए हैं। निर्वासन के बाद एक और भविष्यवक्ता, जकर्याह, जिसने मंदिर के पुनर्निर्माण में लोगों को प्रोत्साहित किया और हो सकता है कि वह जोएल के समय से पहले आया हो, वह जकर्याह अध्याय 8 पद 7 में बात करने जा रहा है, वह एक वापसी के बारे में बात करने जा रहा है जो कि है उस प्रतिफल का अभी भी भविष्य है

जिसका अनुभव पहले ही किया जा चुका है। वह कहता है कि यहोवा फिर से इस्राएल के लोगों को उन सभी दूर-दूर के देशों से वापस लाने जा रहा है जहाँ उन्हें निर्वासित किया गया है।

इसलिए, जकर्याह के समय से पहले जो वापसी शुरू हुई थी, उसने यिर्मयाह जैसे भविष्यवक्ताओं द्वारा दिए गए वादों को समाप्त नहीं किया। वास्तव में, जकर्याह ने अपनी पुस्तक के अंत में, जैसा कि उसके पास इज़राइल के भविष्य के बारे में सपने हैं, वह एक और निर्वासन और इज़राइल के लोगों पर एक और आक्रमण और न्याय की कल्पना करता है जो कई मायनों में उस फैसले की तरह दिखने वाला है जो के दिनों में अनुभव किया गया था। यिर्मयाह। जकर्याह द्वारा इस्राएल के भविष्य के बारे में दिए गए इस दर्शन को सुनें।

बेवफाई, ईश्वर की अवज्ञा, वाचा के श्राप, न्याय, सैन्य आक्रमण, निर्वासन, हार और मृत्यु का यह पूरा परिदृश्य फिर से घटित होने वाला है क्योंकि लोग पूरी तरह से ईश्वर के पास वापस नहीं आए हैं। और जकर्याह ने कहा, सुनो, यहोवा के लिये ऐसा दिन आता है, जिस में तुम से लूटी हुई लूट तुम्हारे बीच बांट दी जाएगी। क्योंकि मैं सब जातियों को यरूशलेम के विरुद्ध लड़ने के लिये इकट्ठा करूंगा, और नगर ले लिया जाएगा, और घर लूट लिया जाएगा, और स्त्रियों से बलात्कार किया जाएगा।

तो, यिर्मयाह के दिनों में यहूदा ने जिन भयानक चीजों का अनुभव किया, जकर्याह ने, निर्वासन के बाद के समय में एक भविष्यवक्ता के रूप में कहा, यह सब फिर से होने जा रहा है। और यह कहता है, कि नगर का आधा भाग बंधुआई में चला जाएगा, परन्तु शेष लोग नगर से अलग न किए जाएंगे। तब यहोवा बाहर जाएगा और उन राष्ट्रों के विरुद्ध लड़ेगा जैसे वह युद्ध के दिन लड़ता है।

तो, न्याय होने जा रहा है। परमेश्वर अंततः हस्तक्षेप करेगा। वह अपने लोगों को बहाल करेगा, और इस्राएल और राष्ट्रों के बचे हुए लोग प्रभु की आराधना करने के लिए यरूशलेम आएंगे।

लेकिन निर्वासन, वापसी, पुनर्स्थापना और मुक्ति है जो निर्वासन के बाद की अवधि में हुई वापसी में अनुभव की गई चीजों से परे है। पुराने नियम में हम जिस अंतिम भविष्यवक्ता को देखते हैं, वह भविष्यवक्ता मलाकी के साथ समाप्त होता है। मलाकी निश्चित रूप से कल्पना करता है कि निर्वासन के बाद की अवधि में परमेश्वर और उसके लोगों के बीच एक टूटा हुआ आध्यात्मिक संबंध है।

और कई मायनों में, उसके समय में लोगों की आध्यात्मिक स्थिति बहुत कुछ वैसी ही दिखती है जैसी हम यिर्मयाह के समय में देखते हैं। वास्तव में, मलाकी की पुस्तक भगवान और उसके लोगों के बीच विवादों की एक श्रृंखला के आसपास बनाई गई है, जहां भगवान उन्हें दशमांश नहीं देने, उससे प्यार नहीं करने, उसकी बात नहीं मानने, उसकी वाचा के आदेशों का पालन नहीं करने के लिए दोषी ठहरा रहे हैं। और एक स्थान पर, भविष्यवक्ता लोगों को यहोवा की ओर से यह वचन देता है: मैं ने तुम से प्रेम किया है।

और यह इस्राएल के प्रति परमेश्वर के वाचा प्रेम के बारे में बात करता है। उस पर लोगों का जवाब था कि आपने हमसे कैसा प्यार किया है? तो, जाहिर है, निर्वासन के बाद की अवधि में इज़राइल

की आध्यात्मिक स्थिति के साथ एक निश्चित समस्या है। मलाकी का अंतिम वादा यह है कि अंतिम दिनों में, प्रभु एक भविष्यवक्ता, भविष्यवक्ता एलियाह को खड़ा करने जा रहे हैं।

इस युगान्तकारी एलियाह का उद्देश्य, हम नए नियम से समझते हैं जो जॉन द बैपटिस्ट के व्यक्तित्व में पूरा हुआ है। इस युगान्तकारी एलियाह का उद्देश्य लोगों के दिलों को वापस प्रभु की ओर मोड़ना और उसके प्रति वाचा की वफादारी की ओर वापस लाना होगा। इसलिए, यिर्मयाह लोगों को दिखाने, परमेश्वर के पास लौटने का आह्वान कर रहा था।

प्रभु ने पुनर्स्थापना में वादा किया है कि वह लोगों के भाग्य को बहाल करने जा रहा है। लेकिन मलाकी अभी भी इस तथ्य के बारे में बात कर रहा है कि लोगों के दिलों को वापस भगवान की ओर मोड़ने की जरूरत है। ठीक है।

तो, यह पुनर्स्थापना जिसके बारे में यिर्मयाह भविष्यवाणी कर रहा है, जैसे ही हम यह देखना शुरू करते हैं कि यह कैसे सामने आता है, यह एक तरह से गड़बड़ हो जाता है। और यहां तक कि यिर्मयाह की पुस्तक में भी, मुझे लगता है कि जब हम निर्वासन के तुरंत बाद क्या हो रहा है और निरंतर अवज्ञा के बारे में बात करते हैं और अध्याय 40 से 43 में वर्णित करते हैं, तो पुस्तक में भी, अंतहीन निर्वासन का एक धर्मशास्त्र है यिर्मयाह का ही। यिर्मयाह की पुस्तक में अंतिम प्रकरण और कहानी अध्याय 52 में यरूशलेम के पतन और इस तथ्य के बारे में है कि यहूदा के राजा निर्वासन में हैं।

जेल से यहोयाकीन की रिहाई के साथ आशा की यह किरण है, लेकिन निर्वासन की स्थितियाँ, वह अंतिम शब्द है जिसे हम यिर्मयाह अध्याय 52 में देखते हैं। अब, याद रखें कि नई वाचा में, परमेश्वर ने इस्राएल को जो वादा दिया है वह यह है कि वह उनके हृदयों का खतना करने जा रहा है। व्यवस्थाविवरण अध्याय 30 यही कहता है।

यिर्मयाह कहता है कि परमेश्वर लोगों के दिलों पर कानून लिखने जा रहा है, और यहजेकेल कहता है कि प्रभु इस्राएल को एक नया दिल देने जा रहा है। मुझे लगता है कि ये तीनों छवियाँ मूल रूप से एक ही बात कहती हैं।

परमेश्वर अपने लोगों के हृदयों को बदलने जा रहा है। अब, कुछ विद्वान, जब इसे देखते हैं, और वे परमेश्वर द्वारा हृदय का खतना करने या हृदय पर लिखने या नया हृदय देने की इन छवियों को देखते हैं, तो उनका मानना है कि भविष्यवक्ता उसी विचार को प्रतिबिंबित कर रहे हैं जिसका उन्होंने उल्लेख किया है। एक लेखक का कहना है कि परमेश्वर अपने लोगों पर एक मजबूर पश्चाताप थोपने जा रहा है।

चाहे कुछ भी हो, तुम्हें पछताना पड़ेगा। और मूल रूप से, आप यहाँ जो पाते हैं वह यह है कि भगवान को अंततः वह प्रतिक्रिया मिलती है जो वह अपने लोगों से चाहता है, लेकिन इस प्रक्रिया में, उसे उनकी स्वतंत्र इच्छा को हटाना पड़ता है। जॉन कोलिन्स, जो पुराने नियम के एक बहुत ही प्रतिभाशाली विद्वान हैं, कहते हैं कि जब हम यिर्मयाह 31 और एक नए हृदय के इन वादों और हृदय पर लिखने और हृदय के खतने के बारे में सोचते हैं, तो यही एकमात्र तरीका है जिससे हम एक स्वप्नलोक तक पहुँच सकते हैं, वह कहते हैं, क्या हमें यह समस्या है।

ईश्वर को मनुष्य की स्वतंत्रता छीननी होगी। खैर, जब मैं यह देख रहा हूँ कि यह पुनर्स्थापना कैसे होने वाली है, तो कई मायनों में, यरूशलेम के पतन के बाद भगवान और उनके लोगों के बीच बातचीत उतनी ही गड़बड़ लगती है जितनी पहले थी। और जिस तरह से भगवान अपने लोगों को वापस बुला रहे हैं और भगवान मुक्ति के इन कार्यों को कर रहे हैं जहाँ वह लोगों को वापस लाने की कोशिश कर रहे हैं, भगवान इस वापसी को लागू करने के लिए सभी प्रकार की चीजों की शुरुआत कर रहे हैं।

ईश्वर की पहल और उन चीजों के प्रति मानवीय प्रतिक्रियाओं के बीच संघर्ष निर्वासन के बाद भी उतना ही वास्तविक है जितना पहले था। मेरा मानना है कि वे वादे जहाँ भगवान कहते हैं, मैं दिलों का खतना करने जा रहा हूँ, मैं उनके दिल पर लिखने जा रहा हूँ, मैं उन्हें एक नया दिल देने जा रहा हूँ, भगवान अंततः जीतते हैं। और भगवान, सर्वोच्च भगवान के रूप में, अंततः जानते हैं कि उनके लोगों की सही प्रतिक्रिया लाने के लिए क्या करना होगा, और भगवान इसे पूरा करेंगे।

मुक्ति के इतिहास को आगे बढ़ाते हुए, परमेश्वर अपने लोगों की पूर्ण बहाली को पूरा करेगा। परमेश्वर इस नई वाचा का निर्माण करेगा, जहाँ उस वाचा में शामिल प्रत्येक व्यक्ति के पास एक नया और परिवर्तित हृदय होगा जहाँ वे अंततः उसकी आज्ञा मानने में सक्षम होंगे। लेकिन हम निश्चित रूप से इस प्रक्रिया के कार्यान्वयन में यह नहीं देखते हैं कि ईश्वर इस प्रक्रिया में मानवीय प्रतिक्रिया को हटा देता है।

कभी-कभी धर्मशास्त्र की चर्चाओं में, मैं ऐसे अंश भी देखता हूँ जहाँ परमेश्वर हृदय पर लिख रहा है या नया हृदय दे रहा है या हृदय का खतना कर रहा है, जिसका उपयोग अप्रतिरोध्य अनुग्रह और व्यक्तिगत उद्धार के विचार को बढ़ावा देने के लिए किया जाता है। मुझे लगता है कि हमें यहाँ सावधान रहना चाहिए। बाइबल अक्सर हमारी कठोर धर्मशास्त्रीय प्रणालियों की तुलना में बहुत अधिक गड़बड़ होती है।

जैसा कि परमेश्वर इस पुनर्स्थापना को लाने की प्रक्रिया में है, हम अभी भी ईश्वरीय पहल और मानवीय प्रतिक्रिया के बीच गड़बड़ाहट को देखते हैं। यदि हम परमेश्वर को मास्टर शतरंज खिलाड़ी के रूप में कल्पना करते हैं, तो परमेश्वर अंततः जीतेगा और अपने उद्देश्यों को पूरा करेगा। लेकिन ऐसा नहीं लगता कि परमेश्वर केवल अपने प्रतिद्वंद्वी को हर वह चाल चलने का निर्देश देकर जीत जाता है जो वह चाहता है।

कुछ लोगों के लिए, ईश्वर की संप्रभुता के बारे में उनका विचार मूलतः यही है कि वह क्या कर रहा है। वह सभी टुकड़ों को हिला रहा है। मुझे लगता है कि ईश्वर की संप्रभुता के बारे में अधिक बाइबिल विचार यह है कि ईश्वर अपने उद्देश्यों को पूरा करने में इतना अविश्वसनीय रूप से संप्रभु है कि वह मानवीय प्रतिक्रिया की सभी परस्पर क्रिया और आकस्मिकताओं की अनुमति देते हुए भी ऐसा कर सकता है। वह अभी भी जीतता है।

लेकिन भगवान लोगों पर पश्चाताप नहीं थोप रहे हैं। ईश्वर उनकी स्वतंत्र इच्छा को नहीं हटा रहा है क्योंकि वे उसके प्रति प्रतिक्रिया करते हैं। मेरा मानना है कि यह गड़बड़ अंतःक्रिया न्यू टेस्टामेंट में भी जारी है।

हमारे पास अधिनियमों के अध्याय पाँच, पद 31 में एक कथन है, और यह सब यिर्मयाह से संबंधित है। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि यह पश्चाताप के धर्मशास्त्र और लोगों से भगवान के पास लौटने के लिए यिर्मयाह के निरंतर आह्वान पर आधारित है। यीशु अंततः वह वापसी लाने के लिए आये जिसका यिर्मयाह ने वादा किया था।

प्रेरितों के काम अध्याय पाँच, पद 31 में कहा गया है कि यीशु ने अपनी मृत्यु, अपने पुनरुत्थान और अपने स्वर्गारोहण के माध्यम से इस्राएल के लोगों को पश्चाताप का उपहार दिया है। तो ऐसा लगता है कि, ठीक है, परमेश्वर इसे करने जा रहा है, इसे उपहार के रूप में देगा। हालाँकि, प्रेरितों के काम अध्याय तीन, पद 19 में, जब पतरस इस्राएल के लोगों को उपदेश देने के लिए खड़ा होता है, तो वह उन्हें इस तथ्य से रूबरू कराता है कि उन्होंने अपने मसीहा की हत्या कर दी है।

और वह कहता है कि आपको पश्चाताप करने की आवश्यकता है। आपको आगे बढ़ने की आवश्यकता है ताकि आशीर्वाद और पुनर्स्थापना का समय आए जिसका वादा परमेश्वर ने किया है। इसलिए जब हम नए नियम में पहुँचते हैं और परमेश्वर इस नई वाचा को प्रभावी बना रहा है, तो यीशु की मृत्यु उस वाचा को लागू करती है।

दैवीय पहल और मानवीय प्रतिक्रिया का अस्त-व्यस्त अंतर्संबंध अभी भी बना हुआ है। और मुझे लगता है कि हमें इसका सम्मान करना चाहिए और यह समझना चाहिए कि यह बाइबिल संदेश का हिस्सा है। इसलिए, जैसे ही हम पुराने नियम के युग के अंत में आते हैं, हम समझते हैं कि आंशिक वापसी हुई है, लेकिन यह पूर्ण वापसी नहीं है जिसकी ईश्वर ने कल्पना की थी।

चरण एक हो चुका है, लेकिन अगर हम भविष्यवक्ताओं के वादों को गंभीरता से लेने जा रहे हैं, तो इससे परे भी कुछ होना चाहिए। इसलिए, हम अंतरविधान काल में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं, और हम यीशु के समय में नए नियम के युग में आने वाले हैं। एनटी राइट और कई अन्य विद्वानों ने यह महत्वपूर्ण विचार विकसित किया है कि यीशु के समय में, मैंने इसे पुराने नियम में निर्वासन के बाद की अवधि के दौरान नहेमायाह की प्रार्थना में देखा था।

यीशु के समय में, अभी भी यह विचार था कि भले ही इस्राएल देश में था, फिर भी वे निर्वासन में रह रहे थे, और वे अभी भी बंधन में थे। वे रोमनों के बंधन में थे, और वे अब भी उतने ही विदेशी उत्पीड़न के अधीन थे जितने निर्वासन के दिनों में थे। भले ही वे अपनी भूमि पर वापस आ गए हैं, भले ही कुछ समय के लिए वे स्वतंत्रता की अवधि का आनंद लेते हैं और फिर रोमन उसे छीन लेते हैं, फिर भी वे निर्वासन की स्थितियों में रह रहे हैं।

गॉस्पेल में यिर्मयाह की पुस्तक का नए नियम में उपयोग है जो मुझे लगता है कि निर्वासन जारी रखने के इस विचार को दर्शाता है। यिर्मयाह 31 श्लोक 15 में याद रखें, जैसा कि यिर्मयाह निर्वासन की स्थितियों का वर्णन करता है, यह रोने और शोक का समय है। वास्तव में, वह अध्याय 31, श्लोक 15 में कहते हैं, रामा में एक आवाज सुनाई देती है, विलाप और फूट-फूट कर रोने की।

रेचेल अपने बच्चों के लिए रो रही है। मृत्यु और निर्वासन के प्रकाश में, कई जनजातियों की मां, राहेल, अपने लोगों के साथ जो हुआ उस पर शोक मना रही है। वह निर्वासन की स्थितियों का वर्णन करता है।

और याद रखें कि यिर्मयाह का संदेश यह है कि जब वापसी होगी, तो उनका रोना खुशी में बदल जाएगा। यही वह उलटफेर है जिसे ईश्वर लाने की योजना बना रहा है। खैर, मैथ्यू अध्याय 2 में, उस भयानक घटना में जहां मैथ्यू हमें हेरोदेस के बारे में बताता है जो बेथलहम के आसपास के बच्चों और शिशुओं को मार रहा था क्योंकि वह यीशु को सिंहासन के प्रतिद्वंद्वी के रूप में हटाने की कोशिश कर रहा था।

मैथ्यू का कहना है कि जब यीशु के दिनों में लोग निर्दोषों की मौत पर शोक मना रहे थे तो वहां क्या हुआ था। उनका कहना है कि यह यिर्मयाह 31, पद 15 में लिखी गई बात को पूरा करने के लिए था। राहेल, फिर से, अपने बच्चों के लिए रो रही है।

अब, मैथ्यू ने पुराने नियम का बहुत ही रोचक उपयोग किया है। यदि आप यिर्मयाह अध्याय 31 के संदर्भ में वापस जाते हैं, तो आप कहते हैं, मुझे नहीं लगता कि यह यीशु के दिनों में होने वाली किसी घटना की भविष्यवाणी है। खैर, यहाँ पूर्ति का विचार जरूरी नहीं कि भविष्यवाणी का ही हो।

मत्ती एक पैटर्न के बारे में बात कर रहा है, एक पैटर्न जो यिर्मयाह के दिनों में सच था। राहेल अपने बच्चों और मृत्यु और विनाश और निर्वासन और उसके साथ होने वाली सभी विपत्तियों पर रो रही थी। मत्ती जो कह रहा है वह यह है कि वह पैटर्न जारी है और अंततः यीशु के जीवन और सेवकाई में अपनी परिणति तक पहुँच रहा है।

लेकिन निर्वासन की परिस्थितियाँ अभी भी बनी हुई हैं क्योंकि राहेल अभी भी अपने बच्चों के लिए रो रही है। और इस्राएल के लोग अभी भी विदेशी दासता में रह रहे हैं जहाँ एक अत्याचारी दुष्ट राजा उनके बच्चों को मार रहा है। यिर्मयाह के दिनों में ठीक यही हो रहा था।

यह जारी है और यीशु के समय तक चला आ रहा है। अतः निर्वासन की स्थितियाँ अभी भी बनी हुई हैं। अब, नए नियम में कुछ अंश जो मुझे लगता है कि इसे और भी अधिक स्पष्ट करते हैं, वे बचपन और जन्म के कुछ आख्यान हैं जो ल्यूक के सुसमाचार में पाए जाते हैं।

मैं इनमें से कुछ अंश पढ़ना चाहता हूँ: यीशु का जन्म क्यों हुआ? यीशु क्या करने आये थे? मुझे लगता है कि ल्यूक अपने सुसमाचार के ठीक सामने संदेश देने जा रहा है: यीशु इस्राएल के लोगों को उनके निर्वासन से मुक्ति दिलाने के लिए आये थे। जब साइरस ने आदेश जारी किया तो यह मुक्ति केवल उनके लौटने से नहीं हुई।

वे अभी भी बंधन में हैं। वे अभी भी उत्पीड़न के अधीन हैं। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि वे अभी भी अपने पापों के बंधन में हैं।

और प्रभु उन्हें लाने के लिए आता है, या प्रभु यीशु को इस्राएल के मसीहा के रूप में भेजता है ताकि उनका पूर्ण उद्धार हो सके। तो, यहाँ श्लोक 68 क्या कहता है। और यह जकर्याह है, जो बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना का पिता है, आने वाले और यूहन्ना और यीशु के माध्यम से परमेश्वर क्या कर रहा है, इस पर उसकी प्रतिक्रिया।

इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को धन्य हो, क्योंकि उसने अपने लोगों को देखा और उन्हें छुड़ाया है। मेरा मतलब है, वह कुछ ऐसी ही शब्दावली का इस्तेमाल कर रहा है जिसका इस्तेमाल यिर्मयाह की किताब में वापसी के बारे में बात करने के लिए किया गया है। उसने अपने सेवक दाऊद के घराने में हमारे लिए उद्धार का सींग खड़ा किया है।

वह इसके एक भाग के रूप में दाऊद से की गई वाचा की प्रतिज्ञाओं को पूरा करने जा रहा है। जैसा कि उसने पवित्र भविष्यवक्ताओं के मुख से प्राचीन काल में कहा था कि हमें अपने शत्रुओं से और उन सभी के हाथ से बचाया जाना चाहिए जो हमसे घृणा करते हैं। हमारे पूर्वजों से किए गए वादे के अनुसार दया दिखाने और अपनी पवित्र वाचा को याद करने के लिए, वह शपथ जो उसने हमारे पिता अब्राहम से खाई थी कि वह हमें देगा कि हम अपने शत्रुओं के हाथ से मुक्त होकर बिना किसी भय के उसकी सेवा कर सकें।

इसलिए वह कहता है, देखो, यीशु के आने का कारण इस्राएल के लिए उन सभी वाचा वादों को पूरा करना है। उनके इतिहास में जो कुछ भी हुआ है, उसके बावजूद परमेश्वर ने इस्राएल के साथ अपना काम पूरा नहीं किया है। परमेश्वर ने इस्राएल को दिए गए वाचा वादों को अलग नहीं रखा है, और प्रभु, उन वाचा वादों को अंततः वास्तविकता बनाने के लिए, इस्राएल को उनके शत्रुओं से छुड़ाने जा रहा है।

निर्वासन से वास्तविक पूर्ण वापसी अभी भी होनी है। अब, ल्यूक के अगले अध्याय में, अन्ना, यह भविष्यवक्ता कि प्रभु यीशु के आगमन को देखने के लिए लंबे समय तक जीवित रहने की अनुमति देता है, यीशु के आगमन पर जश्न मनाता है और खुशी मनाता है क्योंकि वह समझती है कि ये सभी वादे पुनर्स्थापना और राज्य और अंतिम के बारे में हैं दिन—यीशु उन वादों की पूर्ति है। और इसलिए यहाँ अन्ना की प्रतिक्रिया और प्रतिक्रिया है।

श्लोक 36 में कहा गया है कि अन्ना नाम की एक भविष्यवक्ता थी, और उसकी उम्र बहुत अधिक थी, जब वह कुंवारी थी तब से सात साल तक अपने पति के साथ रही और फिर 84 साल की उम्र तक विधवा रही। वह मंदिर से नहीं निकली, दिन-रात उपवास और प्रार्थना के साथ पूजा करना। और भगवान के प्रति उसकी भक्ति के कारण, भगवान उसे वादों की शुरुआत देखने में सक्षम होने का यह अद्भुत आशीर्वाद देते हैं, जो कि भगवान ने इज़राइल से किए गए वादों की पूर्ति को देखते हैं।

वह यह कहती है, और उसी समय आकर परमेश्वर का धन्यवाद करने लगी, और उन सभी से जो यरूशलेम की मुक्ति की बाट जोह रहे थे, उसके विषय में बोलने लगी। तुम्हें पता है वह किसका इंतज़ार कर रही थी? वह उन वादों के पूरा होने की प्रतीक्षा कर रही थी जो यिर्मयाह ने किये थे जब उसने वादा किया था कि प्रभु उसके लोगों के भाग्य को बहाल करेंगे। और इसलिए, हम यीशु

के समय में आते हैं, और इज़राइल के उद्धारकर्ता बनने के लिए यीशु का पहला आगमन उन वादों की पूर्ति का दूसरा चरण है जो यिर्मयाह ने राज्य, पुनर्स्थापना, एक नया डेविड, यरूशलेम का आशीर्वाद, सभी के बारे में किए थे उन चीजों का।

स्कॉट मैकनाइट ने अपनी पुस्तक, द किंग जीसस गॉस्पेल में हमें जिन चीजों की याद दिलाई है, उनमें से एक यह है कि आप जानते हैं, यीशु क्रूस पर मरने और मेरे पापों का भुगतान करने और मुझे देने के अलावा और भी बहुत कुछ करने के लिए पृथ्वी पर आए थे। स्वर्ग जाने का टिकट। अब, यह एक अद्भुत बात है। और वह व्यक्तिगत मुक्ति जिसका हम अनुभव करते हैं वह एक महान आशीर्वाद है।

लेकिन अंततः यीशु अपने प्रथम आगमन पर इस्राएल की पुनर्स्थापना के लिए आये। और इसके माध्यम से, अंतिम दिन के राज्य के वादे को पूरा करना जो परमेश्वर ने पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के माध्यम से इस्राएल के लोगों से किया था। और फिर अंततः उस सब के माध्यम से, वह सब कुछ लाने के लिए जिसे बाइबिल उन सभी चीजों की बहाली के रूप में संदर्भित करती है जो परमेश्वर के राज्य के पृथ्वी पर आने पर घटित होंगी।

इसलिए, हमारा व्यक्तिगत उद्धार और मेरे उद्धारकर्ता के रूप में यीशु एक महत्वपूर्ण बात है। और यीशु को इस तरह से जानने से मेरा जीवन बदल गया है। लेकिन यीशु मेरा निजी उद्धारकर्ता बनने के अलावा और भी बहुत कुछ करने आये।

वह इस्राएल का पुनर्स्थापक बनकर आया। और वह नई वाचा के वादों को पूरा करने और परमेश्वर द्वारा अपने लोगों के दिलों में कानून लिखने और परमेश्वर के लोगों का निर्माण करने के लिए आया था जो अंततः उसके प्रति वफादार होंगे। यह सब उस चीज़ का हिस्सा है जो यीशु अपने पहले आगमन में कर रहे हैं।

तो, अब इन सबका क्या मतलब है, और यह बेहद महत्वपूर्ण है क्योंकि हम भविष्यवक्ताओं और युगांतशास्त्र के बारे में सोचते हैं और समझते हैं कि पुराना नियम और नया नियम एक साथ कैसे काम करते हैं। और मुझे याद है कि सेमिनरी में मुझे इसकी समझ आने लगी थी, और यह मेरे लिए खुलना शुरू हो गया था कि पुराने और नए नियम एक साथ कैसे संबंधित हैं। और यह केवल यह विचार है, अंतिम दिन, जब भविष्यवक्ता अंतिम दिनों के बारे में बात करते हैं, आने वाले दिनों के बारे में, याद रखें कि यह एक तरह से अस्पष्ट है, वे ठीक से नहीं जानते हैं, उनके पास समय सारिणी नहीं है, लेकिन अंतिम दिन, परमेश्वर का राज्य, आशीर्वाद का युगांतिक युग, इसे हम जो भी कहना चाहें, वह समय जिसके बारे में पुराने नियम के भविष्यवक्ता भविष्यवाणी कर रहे थे।

और जब यिर्मयाह अंतिम दिनों में पुनर्स्थापना और परमेश्वर के राज्य और युगांत के बारे में बात कर रहा है, तो वह समय अवधि यीशु के पहले आगमन पर शुरू हुई। यह केवल कुछ ऐसा नहीं है जो उसके दूसरे आगमन से संबंधित है। और इसलिए, परमेश्वर का राज्य केवल भविष्य नहीं है।

परमेश्वर के जिस राज्य की भविष्यवक्ता आशा कर रहे थे वह केवल यीशु के दूसरे आगमन के बारे में नहीं है। यह कुछ ऐसा है जिसे यीशु के प्रथम आगमन पर अपने प्रारंभिक चरण में महसूस किया जाना शुरू हुआ। तो, जिस तरह से हम इसे देखते हैं, परमेश्वर का भविष्य का राज्य जिसे

यिर्मयाह ने भविष्य में देखा था, भविष्य का राज्य, और ये सभी आशीर्वाद जो यशायाह और अन्य भविष्यवक्ताओं ने पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं में देखे थे, उस समय का उद्घाटन पहले आने से हुआ था यीशु का।

यह उनके दूसरे आगमन पर पूर्ण होगा। और मेरे लिए, यह समझ पाना, मुझे लगता है, वास्तव में इस बात की मेरी समझ में क्रांतिकारी बदलाव लाया कि कैसे पुराने और नए नियम वास्तव में एक दूसरे से संबंधित हैं। लोग अक्सर सवाल पूछते हैं, क्या हम अंतिम दिनों में रह रहे हैं? और वे वास्तव में उस सवाल के बारे में पूछ रहे हैं, क्या आप, उस सवाल से, यह मानते हैं कि यीशु जल्द ही वापस आ रहे हैं? लेकिन वास्तव में, उस सवाल का बाइबिल का उत्तर यह है कि हम निश्चित रूप से अंतिम दिनों में रह रहे हैं।

अंतिम दिनों की शुरुआत यीशु के धरती पर पहली बार आने से हुई। 1 यूहन्ना 2:18 में यूहन्ना कहता है, मेरे छोटे बच्चों, अब अंतिम घड़ी आ गई है। यशायाह और यिर्मयाह ने जो अंतिम दिन देखे, वे यीशु के पहली बार आने से शुरू हुए।

हम 2,000 से अधिक वर्षों से अंतिम दिनों में रह रहे हैं। और इसलिए हो सकता है कि आप इसके बारे में थोड़ा सशंकित हों और आप चाहें, क्या आप इसे साबित कर सकते हैं? क्या कोई ऐसा तरीका है जिसे आप वास्तव में प्रदर्शित कर सकें, क्या यह आपकी धार्मिक प्रणाली की तरह ही है या क्या आप वास्तव में इसे प्रदर्शित कर सकते हैं? ठीक है, आइए पुराने नियम के कुछ अंशों पर वापस जाएँ और कुछ स्थानों पर नज़र डालें जहाँ भविष्यवक्ता राज्य और ईश्वर के शासन करने और शासन करने के लिए आने और मुक्ति और उस आशीर्वाद के बारे में बात कर रहे हैं जो वह इज़राइल में लाने जा रहा है। सबसे पहले, यशायाह 52 श्लोक 7 से 10, पहाड़ों पर उनके पैर कितने सुंदर हैं जो शुभ समाचार लाते हैं, जो शांति का समाचार सुनाते हैं, जो सुख का शुभ समाचार लाते हैं, जो उद्धार का समाचार सुनाते हैं और सिंघों से कहते हैं, तेरा परमेश्वर राज्य करता है।

भगवान राजा है। और इस विचार से परे कि ईश्वर शाश्वत और अनंत राजा है और वह हमेशा से रहा है, एक नए तरीके से, ईश्वर अपने दुश्मनों को हराकर, इज़राइल को घर लाकर, इन वादों के वादों को पूरा करके शासन करना शुरू कर रहा है। खैर, जॉन और यीशु का वादा क्या है और वह घोषणा क्या है जिसके साथ जॉन और यीशु अपना मंत्रालय शुरू करते हैं? परमेश्वर का राज्य निकट है।

तो, यशायाह 52 में जिन खूबसूरत दूतों को यह कहने के लिए आशीर्वाद दिया गया है, कि तुम्हारा ईश्वर शासन करता है, जॉन और यीशु वे दूत हैं। यशायाह 61, इस्राएल की पुनर्स्थापना के समय के बारे में बात करते हुए, यह कहता है, प्रभु परमेश्वर की आत्मा मुझ पर है क्योंकि प्रभु ने गरीबों को अच्छी खबर लाने के लिए मेरा अभिषेक किया है और उसने मुझे टूटे हुए दिलों को बांधने के लिए भेजा है, लोगों को आजादी बन्धुओं, जो बँधे हुए हैं उनके लिये कारागार का द्वार खोलना और प्रभु के अनुग्रह के वर्ष का प्रचार करना। इसलिए परमेश्वर राज्य के आगमन और निर्वासन से मुक्ति की घोषणा करने के लिए एक भविष्यवक्ता को भेज रहा है।

यशायाह, एक अर्थ में, इसकी पहली पूर्ति थी। लेकिन लूका अध्याय 4 में, यीशु की सेवकाई की शुरुआत में, यीशु आराधनालय में खड़े होते हैं, और वे यशायाह की पुस्तक से पढ़ते हैं, और जो अंश वे पढ़ते हैं वह वही है जिसे हमने अभी यशायाह 61 में पढ़ा है, और यीशु उस पाठ को यह कहकर समाप्त करते हैं, आज यह शास्त्र तुम्हारे बीच पूरा हुआ है। क्या आप जानते हैं कि जब यशायाह परमेश्वर की भावी पुनर्स्थापना और निर्वासन से मुक्ति, बंदियों की रिहाई, और परमेश्वर के अनुग्रह के वर्ष के बारे में बात कर रहा था, तो वह किस बारे में बात कर रहा था? मैं आपको यह घोषणा कर रहा हूँ कि मैं इसकी शुरुआत हूँ।

राज्य का वह युग जिसके बारे में भविष्यवक्ताओं ने बात की थी, वह समय जब परमेश्वर यिर्मयाह द्वारा वादा किए गए पुनर्स्थापना को लाएगा, यीशु के पहले आगमन से शुरू होता है। पित्तुकुस्त के दिन, जब परमेश्वर शिष्यों पर आत्मा उंडेलता है, तो पतरस कहता है कि यह योएल द्वारा की गई भविष्यवाणी को पूरा करने के लिए है, जिसने कहा था कि अंतिम दिनों में, प्रभु सभी प्राणियों पर अपनी आत्मा उंडेलेगा। यीशु की सेवकाई में, जब यूहन्ना जेल में था, तो वह वास्तव में निराश और हताश था क्योंकि चीजें बिल्कुल वैसी नहीं हुई थीं जैसा उसने सोचा था, और वह यीशु के पास यह कहने के लिए दूत भेजता है, क्या आप वही हैं जिसका वादा किया गया था? क्या आप मसीहा हैं? क्या आप पुनर्स्थापना लाने जा रहे हैं या हमें किसी और का इंतज़ार करना चाहिए? यीशु उन दूतों से यूहन्ना के पास वापस जाने के लिए कहते हैं और वह यशायाह 35 पद 5 और 6 को उद्धृत करते हैं जो राज्य और पुनर्स्थापना के बारे में बात करते हैं।

और वह कहता है, जॉन के पास वापस जाओ और रिपोर्ट करो। अंधों की आँखें खोली जा रही हैं। बहरों के कान खोले जा रहे हैं।

लंगड़े हिरणों की तरह उछल रहे हैं। भविष्यवक्ताओं ने जिस राज्य का वादा किया था, उसकी आशीर्षे शुरू हो रही हैं। अंतिम दिन आ गए हैं।

अब, जैसा कि हम दूसरे चरण के बारे में सोचते हैं, राज्य की आशीर्षे आ चुकी हैं। भविष्यवक्ताओं द्वारा घोषित राज्य का समय आ चुका है, लेकिन यीशु अंततः इस्राएल के लोगों के पापों के लिए मरकर निर्वासन से इस पुनर्स्थापना को लाएगा। अंततः, उनके पापों के लिए बलिदान होना ही था।

इसलिए, यिर्मयाह ने वादा किया था कि अंतिम दिनों में, भगवान अंतिम भोज के समय ल्यूक 22:20 में इस्राएल के घर और यहूदा के घर के साथ एक नई वाचा बनाएंगे, क्योंकि यीशु मरने की तैयारी कर रहे हैं। वह कहता है कि यह प्याला जो तुम्हारे लिए उंडेला जा रहा है वह इस नई वाचा के खून का प्रतिनिधित्व करता है जिसका वादा यिर्मयाह ने किया था। नई वाचा कैसी है? वाचा की आशीर्षे कैसे पूरी होंगी? और राज्य की प्रतिज्ञाएँ कैसे पूरी होंगी? वे उस व्यक्ति की मृत्यु के माध्यम से उत्पन्न होते हैं जो स्वयं राजा है।

मेरा मतलब है, यह विडम्बना है कि भगवान किस प्रकार मुक्ति का इतिहास बनाते हैं। जो इस राज्य को लाने के लिए आएगा उसे अंततः मरना होगा ताकि उसके लोग इन सभी आशीर्वादों का

अनुभव कर सकें। इसका मतलब यह है कि हमारे पास चरण एक था, जब लोग शुरुआत के 70 साल बाद साइरस के आदेश से निर्वासन से लौट आए थे।

यीशु के पहले आगमन के साथ हमारे पास दूसरा चरण था। उस समय राज्य का उद्घाटन होता है, लेकिन राजा को वास्तव में मरना पड़ता है। यीशु के दूसरे आगमन से जुड़े तीसरे चरण की आवश्यकता होगी जब वे राज्य और पुनर्स्थापना के वादे पूरे होने जा रहे हैं।

यिर्मयाह ने जो भी वादे किए थे, वे क्यों पूरे नहीं हुए? राज्य अभी भी पूरी तरह से क्यों नहीं हासिल कर पाया है और भविष्यवक्ताओं ने जो वादा किया था, वह सब क्यों नहीं कर पाया है? खैर, क्योंकि एक चरण तीन है। और वह चरण तीन यीशु के दूसरे आगमन पर होने वाला है। और इसलिए, क्या यिर्मयाह की भविष्यवाणियाँ और वादे पूरे हुए हैं? हाँ और नहीं।

वे अभी हैं और अभी नहीं हैं। नई वाचा के आशीर्वाद को मसीह की मृत्यु के द्वारा प्रभाव में लाया गया है, लेकिन परमेश्वर ने अपने लोगों, इज़राइल से जो वादा किया था उसका पूरा अनुभव और बहाली अभी तक साकार नहीं हुई है। चरण तीन की आवश्यकता का एक कारण यह है कि यीशु अपने पहले आगमन पर राज्य के आशीर्वाद की पूर्ति लाने के लिए आए थे, यह घोषणा करने के लिए कि भगवान के अनुग्रह का समय आ गया है।

यहाँ तक कि जब यीशु यह घोषणा करने और उस राज्य के आशीर्वाद की घोषणा करने के लिए आते हैं जो वह ला रहे हैं, तो उनके मंत्रालय को अस्वीकृति और अविश्वास का सामना करना पड़ता है। तो, यीशु के समय में इस्राएल के लोगों, यिर्मयाह ने यीशु के समय से पाँच से 600 वर्ष पहले नई वाचा के आशीर्वाद की घोषणा की। वे अभी भी निर्वासन में रह रहे हैं, उत्पीड़न से मुक्ति की प्रतीक्षा कर रहे हैं और अपने पाप से मुक्ति की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

लेकिन जैसे ही यीशु घोषणा करने आए, अरे, मैं ही वह हूँ जो इसे पूरा कर रहा हूँ। उनके मंत्रालय को अस्वीकृति और अविश्वास का सामना करना पड़ा है। आप उस तरह के राजा नहीं दिखते जिसकी हम आशा कर रहे हैं। आप वह कैसे हो सकते हैं जो यशायाह और यिर्मयाह द्वारा वादा की गई इस शानदार बहाली को ला रहा है? और इसलिए, यीशु को विरोध का सामना करना पड़ा।

चरण दो आ गया है, लेकिन उस अविश्वास के कारण जो वादा किया गया था वह केवल आंशिक पूर्ति होगी। यीशु के मंत्रालय के प्रति इज़राइल की अस्वीकृति और अविश्वास की प्रतिक्रिया का मतलब है कि नई वाचा का वादा किया गया था और भविष्यवक्ताओं द्वारा इज़राइल की बहाली के लिए जो कुछ भी कल्पना की गई थी, वह यीशु के पहले आगमन में पूरी तरह से साकार नहीं होने वाला था। उस अविश्वास के परिणामस्वरूप, यीशु इस्राएल के लोगों के लिए एक और भूमिका निभाने जा रहे हैं।

यहीं पर यिर्मयाह की पुस्तक फिर से महत्वपूर्ण भूमिका में आती है। कभी-कभी, नए नियम के अध्ययन में, यिर्मयाह को यशायाह की पुस्तक का छोटा चचेरा भाई माना जाता है। और मैं समझता हूँ कि ऐसा क्यों है, क्योंकि यशायाह ने नए नियम के संदेश को प्रभावित किया है और

नए नियम में जिस तरह से पुनर्स्थापना को दर्शाया गया है, वह यशायाह के दृष्टिकोण से किया गया है।

लेकिन मुझे लगता है कि हमें यिर्मयाह को भी उसका हक देना चाहिए। उद्धार के इतिहास में यिर्मयाह की भूमिका महत्वपूर्ण है। और जब यीशु इस अविश्वास का सामना करता है, तो उसकी सेवकाई में क्या होता है, और हम इस वास्तविकता से निपटते हैं कि इस्राएल के लोग उसके संदेश और विश्वास का जवाब नहीं देने वाले हैं, यह है कि यीशु इस्राएल के लोगों के अविश्वास का सामना करने में यिर्मयाह जैसा भविष्यवक्ता बन जाता है।

मैथ्यू के संस्करण में, जहाँ यीशु अपने शिष्यों से पूछते हैं, लोग मुझे कौन कहते हैं? शिष्यों का कहना है कि उनमें से कुछ कह रहे हैं कि आप भविष्यद्वक्ताओं में से एक हैं या आप यिर्मयाह हैं। और मुझे लगता है कि जब आप यीशु के मंत्रालय को देखते हैं, तो एक स्पष्ट कारण है कि इस्राएल के लोगों ने यीशु को यिर्मयाह जैसे भविष्यद्वक्ता के साथ क्यों जोड़ा होगा। यिर्मयाह की तरह, अपने लोगों के अविश्वास के कारण, याद रखें कि यीशु उनके उद्धारकर्ता, उनके मसीहा बनने आए हैं, लेकिन वे उनके अविश्वास के कारण एक भविष्यद्वक्ता भी बनने जा रहे हैं, जो घोषणा करते हैं कि परमेश्वर यिर्मयाह की तरह ही यरूशलेम और मंदिर को नष्ट करने जा रहा है।

मार्क अध्याय 11 में, हमारे पास वह कहानी है जहां, अपने मंत्रालय के अंत के करीब, यीशु अंदर जाते हैं, मंदिर को साफ करते हैं, और पैसे बदलने वालों को बाहर निकालते हैं। इसे पुराने नियम के परिप्रेक्ष्य से देखते हुए, मैं कहूंगा कि यीशु एक भविष्यवक्ता है जो एक संकेत कार्य कर रहा है जो यह दर्शाता है कि भगवान अपने लोगों के साथ उनकी पूजा के भ्रष्टाचार के कारण क्या करने के लिए तैयार हो रहे हैं। जैसे ही यीशु यह सांकेतिक कार्य करता है और लोगों को यरूशलेम और मंदिर पर भगवान के फैसले की घोषणा करता है, वह वास्तव में यिर्मयाह की कुछ पुरानी सामग्री उधार लेता है।

याद रखें, यिर्मयाह ने मंदिर के विनाश की घोषणा करते हुए मंदिर का उपदेश दिया था। वह बहुत अच्छा उपदेश था। और इसलिए, यीशु उस अभिव्यक्ति का उपयोग करते हैं जिसे यिर्मयाह ने अपने समय में लोगों का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल किया था और कहा था, तुमने भगवान के घर को रॉबर्ट्स की मांद में बदल दिया है।

यीशु ने यह अभिव्यक्ति सीधे पुराने नियम से ली है, सीधे यिर्मयाह की पुस्तक से। और यह हमें दिखाता है कि 586 में यहूदा पर जो न्याय आया, उनके अविश्वास के कारण निर्वासन का यह न्याय, परमेश्वर के दूत को अस्वीकार करने के कारण निर्वासन का यह न्याय, वे इसे फिर से अनुभव करने जा रहे हैं। एक और निर्वासन होने जा रहा है।

रिचर्ड बाउखम कहते हैं कि 70 ई. में होने वाला यरूशलेम का विनाश, जैसा कि आप इसे बाइबिल के दृष्टिकोण से समझते हैं, निर्वासन का दूसरा चरण है जो 586 में पहले ही हो चुका था। और इसलिए, यिर्मयाह ने मंदिर के विनाश का प्रचार किया था। यीशु बिल्कुल वही बात नहीं करते।

और यिर्मयाह के संदेश में, यिर्मयाह ने कहा था, शिलोह के बारे में सोचो। और याद करो कि कैसे परमेश्वर ने अतीत में शिलोह का न्याय किया था। खैर, अगर परमेश्वर ने अतीत में शिलोह का न्याय किया है, तो वह वर्तमान में यरूशलेम का न्याय कर सकता है।

मुझे लगता है कि यीशु कुछ ऐसा ही कर रहे हैं, जब वे पैसे बदलने वालों को बाहर निकालते हैं और फिर यिर्मयाह 7 से लुटेरों की मांद के बारे में बात करते हैं। वे कह रहे हैं, याद रखें कि 586 में क्या हुआ था। यिर्मयाह की भविष्यवाणियों की पूर्ति को याद रखें। 70 ई. में आपके साथ भी यही होने वाला है।

मार्क अध्याय 11 में, मंदिर की सफाई और पैसे बदलने वालों को पकड़ने तथा मंदिर की सफाई के विवरण में, उस विशेष विवरण में, मंदिर की सफाई को एक अन्य घटना के बीच में रखा गया है। और यहीं पर यीशु ने अंजीर के पेड़ को शाप दिया। और जैसा कि आप मार्क अध्याय 11 में कहानी पढ़ते हैं, यह इस प्रगति का अनुसरण करती है।

यीशु इस बंजर अंजीर के पेड़ को देखता है। वह उसे शाप देता है। वह मंदिर जाता है।

वह वहाँ संकेत कार्य करता है। और फिर उसके बाद, वह अपने शिष्यों को इसका महत्व समझाता है कि तुमने इस पेड़ को क्यों श्राप दिया? और हमें यीशु से स्पष्टीकरण मिलता है कि यह अंजीर का पेड़ इस्राएल के लोगों की आध्यात्मिक बंजरता का प्रतिनिधि है। यदि वे परमेश्वर से सही तरीके से संबंधित होते, तो वे परमेश्वर के दूत का सही तरीके से जवाब देते।

पूरे इस्राएल के इतिहास में, परमेश्वर ने अपने लोगों से सही किस्म के फल की अपेक्षा की है और उसे वह नहीं मिला है। यीशु की कहानी और इस्राएल ने उसके प्रति कैसे प्रतिक्रिया व्यक्त की, मूल रूप से पुराने नियम में इस्राएल द्वारा परमेश्वर के प्रति कैसे प्रतिक्रिया व्यक्त की गई, इसकी कहानी के समान ही है। लेकिन यह दिलचस्प है कि वह अंजीर के पेड़ की अपनी दृश्य छवि के रूप में इसका संदर्भ देता है और इसका उपयोग करता है।

क्योंकि हम यिर्मयाह अध्याय 8 में यिर्मयाह के पास वापस जाते हैं, जो फिर से यिर्मयाह अध्याय 7 के बाद आता है। और मैं आपको याद दिला दूँ, यिर्मयाह अध्याय 7 में क्या है? यह मंदिर का उपदेश है। यह वह स्थान है जहाँ यिर्मयाह ने उन पर मंदिर को लुटेरों का अड्डा बनाने का आरोप लगाया था, बिल्कुल वैसा ही जैसा यीशु ने कहा था।

और यहाँ वह कथन है जो यिर्मयाह अध्याय 8, श्लोक 13 में देता है। यहोवा की यह वाणी है, कि जब मैं उन्हें इकट्ठा करूँगा, तब न तो बेल पर अंगूर बचे, और न अंजीर के पेड़ पर अंजीर। यहाँ तक कि पत्ते भी सूख गए हैं, और जो कुछ मैं ने उन्हें दिया था, वह उन पर से चला गया है।

इसलिए, लोगों के अविश्वास, अवज्ञा और निष्फलता के कारण यिर्मयाह को मंदिर के आने वाले विनाश की घोषणा करनी पड़ी। यीशु यिर्मयाह द्वारा किए गए वाचा के वादों को पूरा करने के लिए आता है, लेकिन वह इस्राएल पर एक अभिशाप भी घोषित करने जा रहा है क्योंकि वे उसी आध्यात्मिक स्थिति को दर्शाते हैं जिसका सामना यिर्मयाह ने किया था। इसलिए इसके

परिणामस्वरूप, यीशु, जिसे उद्धार के अग्रदूत के रूप में परमेश्वर द्वारा भेजा गया था, को उस पुनर्स्थापना के होने से पहले परमेश्वर के न्याय की घोषणा करने वाला भविष्यवक्ता बनना पड़ा।

यीशु मंदिर के विनाश का प्रचार उसी तरह से करना शुरू करते हैं जैसे यिर्मयाह ने अपने मंत्रालय में किया था। वह मत्ती 24 में शिष्यों से कहते हैं कि जब वे मंदिर को देखेंगे, तो इस स्थान का एक भी पत्थर खड़ा नहीं रहेगा। यीशु अपने मंदिर के उपदेश का प्रचार करते हैं।

और यीशु, यिर्मयाह की तरह ही, एक रोता हुआ भविष्यवक्ता बन जाता है जो यरूशलेम और वहाँ के लोगों के विनाश पर रोता है और विलाप करता है। और लूका 13, पद 34 में, वह कहता है, हे यरूशलेम, यरूशलेम, जो उन भविष्यवक्ताओं को मारता है जिन्हें परमेश्वर ने बार-बार तुम्हारे पास भेजा है। आप उस पद को बिना सुने नहीं पढ़ सकते, आखिरकार हमने यिर्मयाह के बारे में जो कुछ भी पढ़ा है, बिना यिर्मयाह को यह कहते हुए सुने, काश मेरा सिर आँसुओं का झरना होता, कि मैं अपने लोगों के विनाश पर रो सकता।

आप उस अंश को नहीं सुन सकते जहाँ यीशु कहते हैं, तुमने यिर्मयाह 7 को सुने बिना मेरे द्वारा भेजे गए भविष्यवक्ताओं को बार-बार मार डाला है। प्रभु कहते हैं, मैंने बार-बार अपने सेवकों, भविष्यवक्ताओं को तुम्हारे पास भेजा है, फिर भी तुमने नहीं सुना। हम पुनर्स्थापना के वादों, राज्य के वादों, अंतिम दिनों के वादों और नए नियम के प्रकाश में यिर्मयाह में पाए जाने वाले नए नियम के वादों को कैसे समझते हैं? वे वादे अभी हैं और अभी नहीं। और यीशु मसीह के अनुयायियों के रूप में, हमारे लिए उनकी मृत्यु के कारण, हम उस नए नियम की परिवर्तनकारी आशीषों का अनुभव करते हैं।

याद रखें कि वे क्या हैं। हमें अपने पिछले पापों के लिए क्षमा मिल गई है। हमारे पास वर्तमान और भविष्य के लिए सक्षमता है कि हम वैसे ही जीवन जिएँ जैसा परमेश्वर ने हमें जीने के लिए बनाया है।

लेकिन जब परमेश्वर उद्धार के इतिहास पर काम कर रहा है, तब भी एक ऐसा घटक है जो अभी तक नहीं है। और जब हम यीशु के दूसरे आगमन के बारे में सोचते हैं तो हम उसका बेसब्री से इंतजार करते हैं। हम अभी के समय में जी रहे हैं और अभी तक नहीं।

नई वाचा की आशीषें, जो यिर्मयाह ने इस पुनर्स्थापना में वादा किया था, हम परमेश्वर के लोगों के रूप में अनुभव कर रहे हैं, लेकिन हम अंतिम पुनर्स्थापना की प्रतीक्षा कर रहे हैं। हम उस समय की प्रतीक्षा कर रहे हैं जब परमेश्वर यिर्मयाह से इस्राएल के लोगों के लिए किए गए सभी वादों को पूरा करेगा। और हम यह आशा करते हैं कि प्रभु अपने वादों को पूरा करेगा, कि वह अपने लोगों से किए गए वादों के प्रति वफादार रहेगा।

हम जानते हैं कि ईश्वर ने मसीह में हमारे लिए पहले से ही जो किया है और जिस तरह से हमने पहले से ही उस चीज़ का आनंद लेना शुरू कर दिया है जिसका वादा यिर्मयाह ने किया था जब उसने इस नई वाचा के बारे में बात की थी जिसे ईश्वर अपने लोगों के साथ बनाएगा।

यह यिर्मयाह की पुस्तक पर अपने निर्देश में डॉ. गैरी येट्स हैं। यह सत्र 27 है, यिर्मयाह 30-33 से

पुनर्स्थापना के चरण।